16

पवित्र तम्बू का विश्राम

(9:1-14)

इब्रानियों 8 अध्याय में ज़ोर उत्तम वाचा पर था (देखें आयत 6)। परन्तु उस अध्याय में यह भी संकेत था कि यीशु के पास एक उत्तम तम्बू है: ''सच्चा तम्बू ... जिसे किसी मनुष्य ने नहीं वरन प्रभु ने खड़ा किया है'' (आयत 2; देखें आयत 5)। अब अध्याय 9 के पहले भाग में हम लेखक को यीशु के उत्तम तम्बू पर ध्यान देते हुए पाते हैं। इस अध्याय की पहली आयत दिखाती है कि ये दोनों विषय आपस में जुड़े हुए हैं, जिसमें पहली वाचा पहले तम्बू और उसमें की जाने वाली आराधना सेवाओं के बारे में बताती थी।

तम्बू का अध्ययन ध्यान खींचने वाला है। हमें तम्बू की सभी दिलचस्प बातों पर ध्यान देने के लिए समय नहीं होगा, और न ही इब्रानियों की पुस्तक के लेखक के पास था (देखें 9:5)। हमारे तरीके का सुझाव 9:9 में मिलता है, जहां उसने कहा कि पुराने नियम का तम्बू ''वर्तमान समय के लिए एक दृष्टांत है।'' अनुवादित शब्द ''दृष्टांत'' (*parabole*) उस शब्द से लिया गया है जिससे हमें अंग्रेज़ी शब्द ''*parable*'' मिला है।[1] पैराबोल ''एक ओर रखना'' का संकेत देता है यानी ''यह तुलना को ध्यान में रखते हुए 'किसी चीज़ को किसी दूसरी चीज़ के पास रखना' का संकेत देता है।''[2] एक अर्थ में लेखक ने पृथ्वी की वेदी (तम्बू) को स्वर्गीय वेदी के पास रखकर दोनों की तुलना करें।

नमूना

उस तुलना को समझने के लिए पहले पृथ्वी के तम्बू को देखते हैं। अध्याय 8 उस तम्बू के ''नमूने'' और ''उस नमूने के अनुसार सब कुछ'' (आयत 5) बनाने के महत्व की बात करता है।

तम्बू की चीज़ें (9:1-5)[3]

तम्बू में रखी कई चीज़ों का उल्लेख पहली पांच आयतों में मिलता है। ये सभी चीज़ें तम्बू के अन्दर:

- पवित्र स्थान (आयत 2)।[4]
- सोने का दीवट (आयत 2)।
- पवित्र रोटी वाली मेज़ (आयत 2)।
- दूसरा पर्दा (पवित्र स्थान और परम पवित्र स्थान के बीच का पर्दा) (आयत 3)।
- परम पवित्र स्थान (आयत 3)।[5]
- धूप की वेदी (आयत 4) जिसे ''सोने की वेदी'' भी कहा जाता था। यह पवित्र स्थान में पर्दे के सामने थी; परन्तु क्योंकि धूप का धुआं परम पवित्र स्थान में जाता था जिस

कारण लेखक ने इस वेदी को परम पवित्र स्थान के साथ जुड़े हुए बताया।
- वाचा का संदूक और उसका सामान (आयत 4)।
- प्रायश्चित का ढकना (वाचा के संदूक का ढकना) (आयत 5)।

अध्याय 8 के शेष भाग में अन्य चीज़ों के होने का संकेत है। ये चीज़ें तम्बू के बाहर थीं:

- तम्बू के सामने पीतल की वेदी (पीतल से ढकी बड़ी वेदी) यहीं पर बलिदान किए जाते थे, जहां पशुओं का लहू बहाया जाता था। (इन बलिदानों के हवाले आयतों 7, 9, 11-13 में मिलते हैं।)
- पीतल की वेदी और तम्बू के बीच स्थित हौदी। यहां सांसारिक ''स्नान'' होते थे (देखें आयत 10)।

संस्कारों में पाई जाने वाली बातें (9:6-10)

पहले तो पवित्र स्थान में याजकों द्वारा की जाने वाली सामान्य सेवा का उल्लेख है (आयत 6)।[6] जहां तक लेखक के तर्क की बात है उसमें यह इतने महत्व की बात नहीं है। वह केवल यह ध्यान दिला रहा था कि यह सेवा अस्थाई थी (आयत 8)। उसकी टिप्पणियों का मुख्य फोकस प्रायश्चित का दिन था जब महायाजक परम पवित्र स्थान में प्रवेश करता है (आयत 7; देखें आयत 25)।[7]

दृष्टांत

फुटकर दृष्टांत

संसार की और स्वर्ग की अर्थात शारीरिक और आत्मिक बातों की तुलना करते हुए इस सब को ध्यान में रखें। सदियों से प्रचारकों को सांसारिक तम्बू और मसीहियत में समानताओं का सुझाव देना पसन्द रहा है।

- याजक पवित्र स्थान में प्रवेश करने से पूर्व हौदी में स्नान करते थे और बपतिस्मा लेने पर ''हम सच्चे मन देह को शुद्ध जल से [धुलवाते] हैं'' (10:22)।
- पवित्र स्थान में रोशनी सोने के दीवट से आती थी और हमें आत्मिक प्रकाश परमेश्वर के वचन से मिलता है (4:12; देखें भजन संहिता 119:105)।
- जिस प्रकार से धूप का धुआं परम पवित्र स्थान में जाता था वैसे ही हमारी प्रार्थनाएं स्वर्ग में ऊपर को जाती हैं (देखें, प्रकाशितवाक्य 5:8; 8:3, 4)।

मुख्य उद्देश्य

परन्तु लेखक का उद्देश्य पुराने नियम वाले तम्बू की हर चीज़ और मसीहियत में इसके पूर्वक में समानता बनाना नहीं था। हमेशा की तरह उसका उद्देश्य यीशु को ऊंचा करना अर्थात उसकी श्रेष्ठता को दिखाना था। हमारे बड़े महायाजक के रूप में यीशु ...

- यीशु ''हाथ के बनाए हुए'' तम्बू में नहीं ''पर स्वर्ग ही में'' गया (आयतें 11, 24)।
- बकरों और बछड़ों का लहू नहीं बल्कि अपना ही लहू लेकर गया (आयत 12)।
- अपने नहीं बल्कि हमारे पापों के लिए बलिदान लेकर गया (देखें आयतें 7, 14; 4:15; 7:27)।
- ''वर्ष भर में एक ही बार'' (आयत 7) नही, बल्कि ''एक ही बार'' (आयत 12) अर्थात ''सदा के लिए'' और ''सब लोगों के लिए'' (देखें आयतें 25-28; 9:12; 10:10)!

प्वायंट

इस लिए लेखक ने सांसारिक तम्बू में की जाने वाली सेवा को स्वर्गीय तम्बू की सेवा के साथ रखते हुए कुछ अन्तर बताए। उसके कहने का प्वायंट या उद्देश्य क्या था?

हमारी वेदी उत्तम है।

हमारे वचन पाठ से कई सबक सीखे जा सकते हैं। एक यह है कि हमारी वेदी उत्तम है। मूल तम्बू तेज़ से भरा है। सांसारिक तम्बू के भीतर का सामान सोना या सोने से ढका था; तौभी हमारा मन्दिर उससे भी तेज से भरा है। यह स्वर्ग में है!

हमारा बलिदान उत्तम।

परन्तु मुख्यतया लेखक हमें बताना चाहता था कि *हमारा बलिदान* उत्तम है:

- पशुओं के बलिदान पुराने नियम के कायदों का एक भाग थे (आयत 10), जबकि हमारा बलिदान नये नियम के छुटकारे के केन्द्र (आयत 12) है।
- पशुओं के बलिदान शरीर से सम्बन्धित थे (आयत 13), जबकि हमारा बलिदान पापों को क्षमा करता और विवेक को शुद्ध करता है (आयत 14)।
- पशुओं के बलिदान से अस्थाई शुद्धता होती थी (सांकेतिक रूप में) जबकि हमारा बलिदान अनन्त छुटकारा दिलाता है (आयत 12)।
- पशुओं के बलिदान कुछ लोगों (अर्थात यहूदियों) के लिए थे जबकि हमारा बलिदान ''बहुतों'' (आयत 28) अर्थात सारी मनुष्य जाति के लिए है (2 कुरिन्थियों 5:15)।

हमारी सेवा उत्तम होनी चाहिए।

यह सच है इस कारण प्रभु के लिए हमारी सेवा उत्तम ही होनी चाहिए। आयत 14 के इन शब्दों को न भूलें। ''मसीह का लहू ... तुम्हारे विवेक को ... शुद्ध करेगा ताकि तुम *जीवते परमेश्वर की सेवा करो*।'' हमें बचाया गया है ताकि हम सेवा कर सकें! अगले पाठ में (आयत 19 से आरम्भ करके) लेखक की सबसे लम्बी ''प्रोत्साहन की बात'' आरम्भ होती है।

सिखाने वाले के लिए नोट्स

किसी कारण लेखक ने अपने उदाहरण में मन्दिर के बजाय तम्बू का इस्तेमाल किया। तम्बू एक वहनीय डेरा था, जबकि मन्दिर एक पक्का ढांचा था। आपको तम्बू और उसकी सेवा की बातों से परिचित होना चाहिए (निर्गमन 35–40)।

टिप्पणियां

[1]NIV के अनुवाद में ''उदाहरण'' है जबकि जे. बी. फिलिप्सि के अनुवाद में ''चित्र'' शब्द है। [2]डब्ल्यू. ई. वाइन, मैरिल एफ. अंगर, एंड विलियम व्हाइट, जूनि., *वाइन'स कम्पलीट एक्सपोज़िटरी डिक्शनरी ऑफ ओल्ड एंड न्यू टैस्टामेंट वर्ड्स* (नैशविल्ले: थॉमस नेल्सन पब्लिशर्स, 1985), 457. [3]तम्बू का रेखाचित्र देखें। [4]आयत 6 में पवित्र स्थान को ''पहला तम्बू'' कहा गया है। [5]आयत 7 में परम पवित्र स्थान को ''दूसरा'' तम्बू कहा गया है। [6]आप बता सकते हैं कि पवित्र स्थान के प्रत्येक सामान के सम्बन्ध में याजकों का क्या काम था। [7]उस दिन होने वाली सब बातों पर विचार करें। ''वर्ष में एक बार'' का अर्थ है ''एक साल में एक दिन।'' महायाजक उस दिन परम पवित्र स्थान में कम से कम तीन बार जाता था।

तम्बू में आराधना के लिए इस्तेमाल होने वाली वस्तुएं

धूप की सोने की वेदी

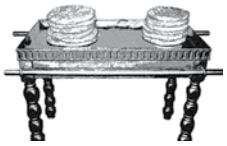

पवित्र रोटियों वाली मेज

हौदी

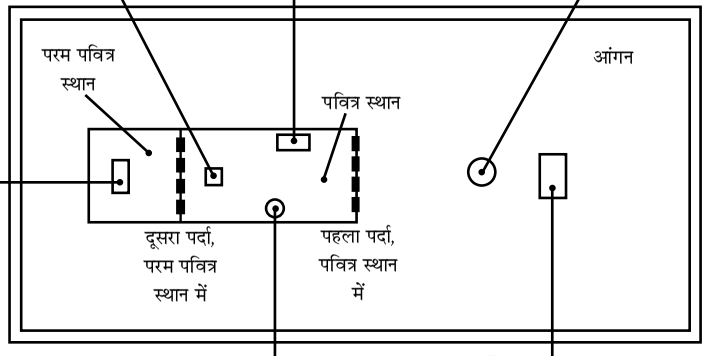

प्रायश्चित का
ढकना

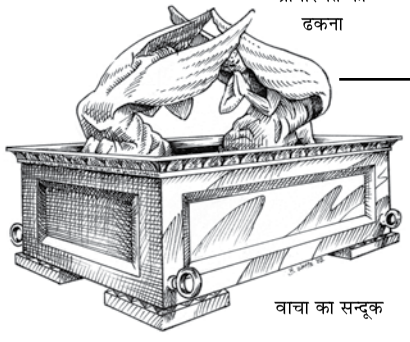

वाचा का सन्दूक

सोने का दीवट

बलिदान के लिए पीतल की वेदी